एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मसूर की उन्नत खेती एवं कीट प्रबंधन

(*आदित्य तिवारी[1] एवं श्रेया तिवारी[2])

[1]ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, सतना म. प्र.

[2]एम.एस-सी. (कृषि प्रसार), म. गा. चि. ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, म. प्र.

*संवादी लेखक का ईमेल पता: tiwari.aditya0903@gmail.com

मध्य प्रदेश में रबी मौसम की दलहनी फसल में मसूर का महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर का उत्पादन मध्यप्रदेश में सबसे अधिक सतना, पन्ना, रीवा, नरसिंहपुर, सागर, रायसेन, दमोह, जबलपुर, सीहोर एवं अशोकनगर जिलों में किया जाता है। मसूर की उत्पादकता औसत रूप में 10 से 12 कुंटल प्रति हेक्टेयर है। परन्तु उन्नत तकनीक का प्रयोग कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

उन्नत प्रजातियॉं–

पंत एल 209, एल. 4594, जे.एल.3, जे.एल.1, आई.पी.एल 81, वी.एल.मसूर 4

जलवायु– मसूर की खेती जाड़े के मौसम में की जाती है।

खेत की तैयारी–सामान्यतः मसूर की खेती सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। परन्तु काली, दोमट एवं बलुअर दोमट मिट्टी खेती के लिये उपयुक्त रहती है। काली मिट्टी मटियार मिट्टी एवं लैटराइट मिट्टी जिसमें जल निकलने की उचित व्यवस्था हो, खेती के उपयुक्त होती है।

बीज– बीज की मात्रा प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा. उचित रहती है। परन्तु छोटे दाने के लिये 35 किग्रा एवं बड़े दाने के लिये 50 किग्रा प्रति हेक्टेयर उपयोग में लाना चाहिये।

बीज का उपचार– मसूर के बीज में लगने वाले रोगो के उपचार के लिये 2 ग्राम थाइरम + 1 ग्राम कार्वेन्डाजिम से एक किग्रा. बीज की दर से उपचारित करने के बाद बुवाई करना चाहिये।

बुवाई –सामान्यतः बोवाई के लिये कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर होना चाहिये। बुवाई में देर होने पर कतारों की दूर 20–25 सेंमी अर्थात कम कर देना चाहिये। बुवाई करते समय यह ध्यान रहे कि बीज को 5 से 6 सेमी गहराई पर होना चाहिये।

बुवाई का समय– असिंचित खेत में नमी रहने पर अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह के बीच एवं सिंचित अवस्था में मसूर को 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर, के मध्य बुवाई की जानी चाहिये।

बुवाई की विधि– उपचारित बीज को नाड़ी या सीडड्रिल की सहायता से बोना चाहिये। इसके अलावा छिडकाव द्वारा भी बोया जा सकता है। लेकिन अच्छे उत्पादन के लिए कतार से बुवाई करना चाहिये।

सिंचाई –बुवाई के समय खेत में नमी न होने पर पलेवा करने के बाद ही बुवाई करें। मसूर की फसल के लिए दो सिंचाई पर्याप्त होती हैं। पहली सिंचाई शाखाएं बनते समय एवं दूसरी सिंचाई फल आने पर करना चाहिये। एक ही बार सिंचाई की व्यवस्था होने पर शाखाएं बनते समय सिंचाई करना चाहिये।

उर्बरक अथवा खाद का प्रयोग –उत्पादन में वृद्धि करने के लिये 15 टन गोबर की खाद व 20 किग्रा. नत्रजन, 50 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर एवं 20 किग्रा. प्रति हेक्टेयर पोटास का प्रयोग करना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण –मसूर की फसल में मुख्य रूप से बथुआ एवं हिरखुरी नामक खरपतवार अधिक होते हैं। खरपतवारों का नियंत्रण बुवाई के 25–30 दिन के अंदर करना आवश्यक है। क्योंकि यह अवस्था अति संवेदनशील होती है। इसलिये हाथ से निराई करें। सकरी पत्ती वाले खरपतवारों के निदान के लिये क्विजालफाप इथाइल का 2 मिलीमीटर प्रतिलीटर पानी में घोल बनाकर फसल की बोनी के 25–30 दिन में छिडकाव करें।

रोग नियंत्रण –मसूर फसल का प्रमुख रोग गेरूआ रोग है। यह रोग जनवरी माह में फैलता है तथा विशेष प्रजातियों में अधिक नुकसान करता है। इस रोग के कारण पत्तियों तथा तनों पर भूरे अथवा गुलावी रंग के फफोले दिखाई देते है जो बाद में काले पड जाते हैं तथा रोग का प्रकोप अधिक होने से सम्पूर्ण पौधा सूख जाता है।गेरूई रोग से फसल प्रभावित होने पर 0.3 प्रतिशत मेन्कोजेब एम–45 का 15 दिन के अन्तर पर दो बार अथवा हेक्जाकोनाजोल 0.1 प्रति. की दर से छिडकाव करना चाहिये।

जल निकास – खेत में सिंचाई या वर्षा का पानी भरा न रहने दें। क्योंकि मसूर की फसल ज्यादा समय तक पानी के संपर्क में रहने से खराब हो जाती है। उत्पादन में कमी आती है। इसलिए खेत की निचली सतह पर नालियां बना दें जिससे आकस्मिक अधिक वर्षा होने पर पानी बहकर बाहर निकल जाये।

कीट नियंत्रण –मसूर की फसल में माहु तथा फलीछेदक कीट का प्रकोप सबसे अधिक होता है। यह काले रंग का छोटा कीट होता है। जो पौधे के तने में झुण्ड में चिपके दिखाई देते हैं और यह पौधे का रस चूसते हैं जिससे पौधा कमजोर हो जाता है। जिस कारण उत्पादन में कमी आ जाती है। माहू का नियंत्रण इमिडाक्लोरपिड 150मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर एवं फलीछेदक हेतु इमामेक्टीन बेजोइट 100 ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिये।

कटाई– मसूर की फसल की कटाई पककर पीली पड़ने पर करनी चाहिये। फसल को भली–भांति सुखाकर मडाई करते है तथा इसके बाद ओसाई करके दाने को भूसे से अलग करते हैं।

उपज– मसूर का उत्पादन सामान्यतः 15–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होता है। परन्तु उन्नत तकनीक द्वारा मसूर का उत्पादन 20–25 कुटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है।

भण्डारण – फसल की गहाई के बाद दानों को अच्छी तरह धूप में सुखा लें। जब उसमें नमी की मात्रा 10–12 प्रतिशत तक आ जाए तब भण्डारण करें। भण्डार में अनाज भरकर ढक्कन बंद कर देना चाहिये जिससे अंदर हवा न जाये जिससे कीटों के प्रकोप का खतरा न रहे।

प्रमुख बातें –

- गर्मियों में गहरी जुताई करें।
- खेत में पकी हुई गोवर की खाद का प्रयोग करें।
- संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें।
- उक्टा निरोधक व सहनशील प्रजातियॉ जैसे जे.एल. 3, जे.एल 1, नरी, आईपीएल 81, आरव्हीएल 31 का प्रयोग करें
- उन्नतशील प्रजातियॉ– पीएल 5, पीएल 7, जेएल 1, जेएल 3, एचयसएल 57, के–75 प्रमाणित बीत का प्रयोग करें।
- प्रथम सिंचाई 45 दिन बाद एवं आवश्यक हो तो फलियॉ आने के समय सिंचाई करें।
- पाले से बचाने के लिये घुलनशील सल्फर (गंधक) 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में छिकाव करें तथा मेढ़ो पर धुंआ एवं हल्की सिंचाई करें।